## ऊंचे कद पर कर

जोनाथन शहर में घूम रहा था उसने देखा कि एक काफी संभ्रांत दिखने वाला आदमी जिसने अच्छे कपड़े पहने हुए थे सड़क पर घुटने मोड़े हुए चलने की कोशिश कर रहा था। घुटनों से चलने की कोशिश में उसे काफी दर्द हो रहा था। देखने में ऐसा नहीं लग रहा था कि वह आदमी अपंग है, बस थोड़ा छोटा दिख रहा था। जोनाथन ने उसकी मदद के लिए हाथ बढ़ाया लेकिन उस आदमी ने मदद लेने से इंकार कर दिया।

दर्द से कराहते हुए वह आदमी बोला, "धन्यवाद, लेकिन मुझे मदद की जरूरत नहीं है। घुटने के बल चलने की आदत बनने में कुछ समय तो लगेगा ही।"

" तुम ठीक तो हो ना? लेकिन तुम घुटनों पर क्यों चल रहे हो सीधे खड़े हो कर क्यों नहीं चलते?"

" ओह! कराहते हुए वह आदमी बोला, "दरअसल यह कर से बचने के लिए मेरी एक कोशिश है।"

" कर?" जोनाथन ने दोहराया। लेकिन सीधे चलने का कर से क्या संबंध है?"

"हर तरह का संबंध है!" आह भरता हुआ वह आदमी अब अपनी इस यातनापूर्ण स्थिति से कुछ आराम पाने के लिए पैरों के बल बैठ गया था। उसने अपनी कमीज की जेब से एक रूमाल निकाल कर अपनी भौंहें साफ की। संतुलन बना कर बैठते हुए उस आदमी ने पहले एक घुटने की और फिर दूसरे घुटने की मालिश की। कपड़े की कई परत बना कर घुटने के पास सिली हुईं थी। वह बोला, "हाल ही में सरकार ने अलग-अलग लंबाई वाले लोगों को बराबर मौका देने के लिए करों के ढांचे में सुधार किए हैं।"

" बराबरी?" जोनाथन ने पूछा।

"कृपया थोड़ा पास आ जाओ ताकि मुझे चिल्ला कर न बोलना पड़े," उस आदमी ने गुजारिश की। "हां, अब ठीक है। अधिकारियों की परिषद ने फैसला किया है कि लंबे आदमियों को कुछ ज़्यादा ही फायदे मिल जाते हैं।"

" लंबाई के फायदे?"

" ओह, हां! नौकरी में, तरक्की में, खेलों में, मनोरंजन के क्षेत्र में, राजनीति में यहां तक कि शादी के लिए भी लंबे लोगों को वरीयता मिलती है! आह!" उसने रूमाल अपनी पेंट के उस हिस्से में बांध दिया जो अभी-अभी फटा था। "इसलिए परिषद ने लंबे लोगों पर काफी ज़्यादा कर लगा दिया है।"

"लंबाई के लिए लोगों को कर देना पड़ता है?" जोनाथन के आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं था।

" हां हमें अपनी लंबाई के अनुपात में कर देना पड़ता है।"

" क्या किसी ने इसका विरोध नहीं किया?" जोनाथन ने पूछा।

" केवल उन लोगों ने इस पर आपत्ति की जिन्होंने घुटनों के बल चलने से इंकार किया," वह आदमी बोला। " लेकिन राजनेताओं को इस कर से छूट मिली है। आमतौर पर हम लंबे लोगों को ही अपना नेता चुनते हैं! हम अपने नेताओं को आदर के साथ देखते हैं।"

जोनाथन को समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा कैसे हो सकता है कि सरकार किसी से लंबे होने का कर वसूले। उसने दोनों हाथ से आदमी के घुटनों की ओर इशारा करते हुए पूछा, " तुम केवल एक कर से बचने के लिए घुटनों के बल चलोगे?"

" बिल्कुल!" दर्द भरी आवाज़ में उस आदमी ने जवाब दिया।" हमारे जीवन का उद्देश्य ही खुद को सरकारी करों के अनुरूप बनाना है। यहां कुछ लोग ऐसे भी मिल जाएंगे जिन्होंने रेंग कर चलना शुरू कर दिया है।"

"ओह! उसमें तो काफी दर्द होता होगा!" जोनाथन सिहर कर बोला।

" दर्द तो होगा ही, लेकिन वैसे न चलें तो कर देने में और ज़्यादा दर्द होगा। आह! केवल बेवकूफ लोग ही सीधा खड़े हो कर इतना ज़्यादा कर देना पसंद करेंगे। सीधा खड़े हो कर चलने का विकल्प बहुत महंगा है।"

जोनाथन ने इधर-उधर नज़र घुमाई तो देखा कि काफी सारे लोग अपने घुटनों पर चल रहे थे। एक औरत बहुत धीरे-धीरे रेंग कर चलती हुई सड़क पार कर रही थी। बहुत सारे लोग झुक कर चलते हुए तेजी से दौड़े चले जा रहे थे, उनके कंधे झुके हुए थे। केवल कुछ गिने-चुने लोग ही करों की परवाह किए बगैर सीधे चल रहे थे। अचानक जोनाथन ने सड़क पार स्थित पार्क की एक बेंच में बैठे तीन व्यक्तियों को देखा। "अरे तुमने उन तीन लोगों को देखा," जोनाथन ने उनकी और इशारा करते हुए उस आदमी से पूछा, " उन्होंने अपनी आंखें, कान और मुंह क्यों बंद किए हुए हैं?"

"ओह, वो? वो लोग अभ्यास कर रहे हैं," घुटनों के बल आगे बढ़ता हुआ वह आदमी बोला, "वह आगे लगने वाले टैक्स से बचने के लिए अभी से अभ्यास कर रहे हैं।"

## विचार-विमर्श

- क्या लोगों का चालाकी का सहारा लेने को मजबूर करने के लिए करों का इस्तेमाल करना उचित है?
- क्या लोग करों से बचने के लिए अपनी जीवन शैली को बदलते हैं?
- क्या सरकारी अधिकारी आम जनता के मुकाबले ज़्यादा समझदार और अच्छे होते हैं?
- क्या लोगों का लंबा होना अन्याय है?
- इसके उदाहरण कौन से होंगे?
- इस कहानी में न्याय संबंधी कौन से मुद्दे जुड़े हैं?

## व्याख्या

सरकार के पास कर एक ऐसा माध्यम है जिससे वह वह नागरिकों को चालाकी भरा व्यवहार करने के लिए बाध्य करती है। यह लोगों के व्यक्तिगत अधिकारों का उल्लंघन है। जब कर नागरिकों के लिए बोझ बन जाते हैं तो उनसे बचने के लिए वह तरह-तरह के तरीके अपनाते हैं। करों पर होने वाला भारी खर्च, उनसे होने वाली असुविधा से बचने के लिए लोग अपनी जीवन शैली बदल देते हैं।

सरकार जब लोगों की बुरी आदतों को सुधारना चाहती है तो वह उन पर कर लगा देती है। कुछ करों का प्रचार सरकार " पाप या गुनाह कर" के रूप में करती है। इन करों से सरकार का आशय होता है कि, "ये काम पाप माने जाएंगे। जनता ये पाप न करे इसलिए इन पर कर लागू किया गया है।" धूम्रपान और शराब पीने पर रोक लगाने के लिए भी सरकार यही तरीका अपनाती है। इन करों से बचने के लिए छिप कर सिगरेट या शराब पीने का रास्ता निकाल लेते हैं। बिडंबना यह है कि सरकार जिन दूसरी चीजों पर कर लगाती है उनके लिए भी लोग इसी तरह की चालाकी का सहारा लेते हैं। इस तरह काम करना, बचत करना या आत्मनिर्भर होना भी गुनाह करने की श्रेणी में समझ लिया जाता है।

यही कारण है कि लोग जितना ज़्यादा काम " जिसे सरकारी समझ में पाप समझा जाता है" करते हैं उन पर उतना ही अधिक कर लगा दिया जाता है। करों के लिहाज से देखा जाए तो सरकार व्यापार में सफलता को भी गुनाह मानती है। हालांकि किसी व्यापार के सफल होने का मतलब है कि उसमें नागरिकों के लिए चीज़ों का उत्पादन हो रहा है, उससे

लोगों को रोजगार मिल रहा है और लोगों की कमाई हो रही है, लेकिन इन सब के बदले व्यापार चलाने वाले को और भी ज़्यादा कर सरकार को देना पड़ता है।

दूसरे शब्दों में कहा जाए तो ज़्यादा कर लगा कर सरकार असल में काम करने और आत्मनिर्भरता को हतोत्साहित करती है। निश्चित तौर पर यह पाप नहीं है, अधिकतर लोग काम करना और आत्मनिर्भर होना चाहते हैं। सरकारी नीतियां ऐसी होती हैं जो सफल व्यापार या व्यक्तियों पर ज़्यादा कर लगाती हैं जबकि अक्षम उपक्रमों को सब्सिडी दे कर सहयोग करती हैं।

अप्रत्यक्ष यानी छिपे हुए कर कम आय वर्ग की जनता को काफी बुरी तरह से प्रभावित करते हैं। इस वर्ग का सरकारी अधिकारियों पर ज़्यादा प्रभाव नहीं होता। इस तरह के कर अलग-अलग रूपों में हम पर खर्च का बोझ डालते हैं। राजनेताओं को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि उनके हित जनता के हितों से अलग होते हैं।

करों, लाइसेंस और कानून की मदद से जनता को नियंत्रण रखने से अर्थव्यवस्था पर बुरा असर पड़ता है, लागत बढ़ती है और काम करने वाले लोगों की जरूरत कम होती है। इससे अक्सर सरकार की नीतियों के समर्थकों और विरोध करने वाले लोगों के बीच शत्रुता और हिंसा की भावना पैदा होती है।

## पृष्ठभूमि

यह अध्याय इस बात के बारे में है कि लोगों पर हर चीज़ समान रूप से लागू होनी चाहिए। इस अध्याय में राजनेता हर आदमी को बराबर कद का बनने के लिए बाध्य कर रहे हैं। पिछले अध्यायों में हमने देखा था कि यूरोप में लोगों ने करों से बचने के लिए खिड़कियां बंद कर दी, जिससे सूरज की रोशनी को रोका जा सके। इस तरह सरकार की बेवकूफी भरी कर नीति के कारण लोगों को अपने जीवन के तरीके को ही बदलना पड़ा। आज भी हालात बहुत बदले नहीं हैं। सरकार कर लगा कर हमारी आदतों को नियंत्रित करने की कोशिश करती है। यह देखना बहुत आश्चर्यजनक है कि सरकारी करों का ढांचा कितने सारे लोगों को जिंदगियों को प्रभावित करता है।

## संदर्भ

एलन बरिस की किताब *ए लिबर्टी प्राइमर* इस विषय पर काफी गंभीरता से विचार करती है।

कर्ट वोनेगट की लिखी किताब *वेलकम टू दि मंकी हाउस* में मज़बूत कदकाठी लोगों को भारी बोझा ढोना पड़ता है जिससे वह कमज़ोर हो कर दूसरे लोगों के बराबर हो जाएं।

एटलस फाउंडेशन मुक्त व्यापार, मुक्त बाज़ार और व्यक्तिगत जिम्मेदारी को बढ़ावा देने वाली एक सक्रिय और सफल अंतर्राष्ट्रीय संस्था है। http://www.atlasusa.org

बॉक्स1

हम, और आज़ादी पर हमारे जैसा गहरा विश्वास करने वाले सभी लोग, अपने घुटनों के बल पर जिंदा रहने की बजाय पैरों पर खड़े हो कर मरना ज़्यादा पसंद करेंगे। वो जो सरकार की चालबाजियों को चकमा दे सकेंगे वे गर्व के साथ खड़े होंगे।
---------- फ्रेंकलिन रूज़वेल्ट का एक कथन (हालांकि वो खुद नहीं चाहते थे कि लोग उनकी सरकार के कुछ कार्यों का विरोध करें।)

बॉक्स2

◌:) जुर्माना ग़लत काम करने पर लगने वाला एक कर है, जबकि कर सही काम करने पर लगने वाला जुर्माना है।